IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed ( Group -I) Journal Volume 12 ,Iss 1, 2023

# कोविड-19 के बीच नागपुर, महाराष्ट्र में विश्वविद्यालय पुस्तकालय: सेवा अनुकूलन का आकलन

**हर्षा मुकेश पाटिल**
शोधार्थी शोध
ग्रंथालय एवं सूचना विज्ञान विभाग
मैट्स विश्वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ)

**डॉ. कल्पना चन्द्राकर**
निर्देशक एवं विभागाध्यक्ष
ग्रंथालय एवं सूचना विज्ञान विभाग
मैट्स विश्वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ)

**सारांश:**

कोविड-१९ महामारी ने विश्वविद्यालय पुस्तकालय सेवाओं को गहराई से प्रभावित किया, जिससे दुनिया भर के संस्थानों को अभूतपूर्व चुनौतियों के अनुकूल होने के लिए मजबूर होना पड़ा। यह अध्ययन नागपुर शहर, महाराष्ट्र के विश्वविद्यालयों में पुस्तकालय सेवाओं पर महामारी के प्रभावों की जांच करता है। यह भौतिक से डिजिटल सेवाओं में परिवर्तन, पुस्तकालय कर्मचारियों और उपयोगकर्ताओं द्वारा सामना की जाने वाली चुनौतियों और पहुँच की निरंतरता सुनिश्चित करने के लिए लागू किए गए अभिनव समाधानों पर प्रकाश डालता है। प्रमुख निष्कर्षों में डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म पर बढ़ती निर्भरता, ई-संसाधनों को तेज़ी से अपनाना और वर्चुअल संदर्भ सेवाओं का एकीकरण शामिल है। इन प्रगति के बावजूद, तकनीकी और वित्तीय बाधाएँ, उपयोगकर्ताओं के बीच सीमित डिजिटल साक्षरता एवं संसाधन पहुँच ने महत्वपूर्ण बाधाएँ खड़ी कीं। अध्ययन विश्वविद्यालय पुस्तकालयों की लचीलापन और अनुकूलनशीलता को रेखांकित करता है एवं भविष्य में एक स्थायी हाइब्रिड सेवा मॉडल के लिए रणनीतियों का सुझाव देता है।

**मुख्य शब्द:** ***कोविड-१९ महामारी, विश्वविद्यालय पुस्तकालय, डिजिटल परिवर्तन, पुस्तकालय सेवाएँ, ई-संसाधन***

**परिचय:**

पुस्तकालय शैक्षणिक संस्थानों की आधारशिला के रूप में कार्य करते हैं, शिक्षण, सीखने और अनुसंधान गतिविधियों का समर्थन करने के लिए आवश्यक संसाधन और सेवाएँ प्रदान करते हैं। विश्वविद्यालयों में, पुस्तकालय बौद्धिक विकास को बढ़ावा देने और ज्ञान तक पहुँच सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हालाँकि, कोविड-१९ महामारी ने विश्वविद्यालय पुस्तकालयों के कामकाज सहित वैश्विक स्तर पर शैक्षिक प्रणालियों को बाधित कर दिया। भारत में, वायरस के प्रसार को रोकने के लिए लगाए गए राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन ने भौतिक पुस्तकालय सुविधाओं को बंद करना आवश्यक बना दिया, जिससे उन छात्रों और शिक्षकों दोनों के लिए एक बड़ी चुनौती पैदा हो गई जो उन पर निर्भर थे।

महाराष्ट्र के एक प्रमुख शैक्षिक केंद्र नागपुर शहर में, विश्वविद्यालय के पुस्तकालयों को नई परिस्थितियों के अनुकूल तेज़ी से ढलने के लिए मजबूर होना पड़ा। पारंपरिक सेवाएँ जैसे कि भौतिक पुस्तक उधार, ऑन-साइट रीडिंग रूम और व्यक्तिगत संदर्भ सहायता को निलंबित कर दिया गया, जिससे पुस्तकालयों को डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म की ओर रुख करना पड़ा। ऑनलाइन शिक्षा में अचानक बदलाव ने शैक्षणिक संसाधनों तक दूरस्थ पहुँच की माँग को और बढ़ा दिया।

यह शोधपत्र नागपुर शहर के विश्वविद्यालयों में पुस्तकालय सेवाओं पर कोविड-१९ महामारी के प्रभाव का पता लगाता है। यह जाँच करता है कि पुस्तकालयों ने लॉकडाउन के दौरान सेवाएँ कैसे प्रदान कीं, किस हद तक डिजिटल संसाधनों और आभासी उपकरणों को अपनाया गया और पुस्तकालय कर्मचारियों एवं उपयोगकर्ताओं के सामने क्या चुनौतियाँ आईं। इसके अतिरिक्त, अध्ययन इस महत्वपूर्ण अवधि के दौरान ज्ञान संसाधनों तक पहुँच बनाए रखने के लिए नियोजित नवीन रणनीतियों पर प्रकाश डालता है। इन परिवर्तनों और उनके निहितार्थों को

Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, 

समझकर, इस शोध का उद्देश्य महामारी के बाद के युग में पुस्तकालयों की उभरती भूमिका पर चर्चा में योगदान देना है। यह उच्च शिक्षा में पुस्तकालय सेवाओं के भविष्य के बारे में भी जानकारी प्रदान करता है, विशेष रूप से संसाधनों तक भौतिक और डिजिटल पहुँच को संतुलित करने के संदर्भ में।

**शोध के उद्देश्य:**

१) कोविड-१९ महामारी के दौरान नागपुर में विश्वविद्यालय पुस्तकालयों के सामने आने वाली चुनौतियों का विश्लेषण करना, जिसमें भौतिक संचालन और संसाधनों तक पहुँच में व्यवधान शामिल हैं।

२) लॉकडाउन अवधि के दौरान छात्रों, शिक्षकों और शोधकर्ताओं को निरंतर सेवाएँ प्रदान करने के लिए पुस्तकालयों द्वारा अपनाई गई रणनीतियों की जाँच करना।

३) पुस्तकालयों तक सीमित भौतिक पहुँच के बीच शैक्षणिक सामग्री तक पहुँच सुनिश्चित करने में डिजिटल तकनीकों और ई-संसाधनों की भूमिका का मूल्यांकन करना।

४) डिजिटल साक्षरता, संसाधन उपलब्धता और दूरस्थ सेवाओं की प्रभावशीलता से संबंधित मुद्दों सहित पुस्तकालय कर्मचारियों और उपयोगकर्ताओं पर प्रभाव का आकलन करना।

**साहित्य समीक्षा:**

कोविड-१९ महामारी ने दुनिया भर में पुस्तकालय सेवाओं को महत्वपूर्ण रूप से बदल दिया है, जिसमें भौतिक बंद होने के दौरान पहुंच बनाए रखने के लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म की ओर उल्लेखनीय बदलाव हुआ है। लादन, हारुना और मादु (२०२०) ने नाइजीरिया में ई-संसाधनों पर निर्भरता पर प्रकाश डाला, जो भारतीय विश्वविद्यालयों सहित वैश्विक रुझानों को दर्शाता है। कौशिक और कुमार (२०२०) ने भारत में ई-पुस्तकों, ई-पत्रिकाओं और दूरस्थ पहुँच प्रणालियों की मांग में वृद्धि की जांच की, जबकि सीमित बजट और अपर्याप्त बुनियादी ढाँचे जैसी चुनौतियों की पहचान की। इसी तरह, चिसिटा और अन्य (२०२०) ने विकासशील देशों में तकनीकी अपर्याप्तता और उपयोगकर्ता कठिनाइयों पर चर्चा की, ऐसे मुद्दे जो भारतीय विश्वविद्यालय पुस्तकालयों के साथ प्रतिध्वनित होते हैं, जहां इंटरनेट का उपयोग और डिजिटल साक्षरता में असमानताएं बनी रहती हैं।

धवन (२०२०), इफिजेह और यूसुफ (२०२०) ने ऑनलाइन लाइब्रेरी सेवाओं के साथ उपयोगकर्ता की सहभागिता का पता लगाया, यह देखते हुए कि सुविधा की सराहना की गई, ई-संसाधनों से परिचित न होने से चुनौतियां सामने आईं। मिश्रा, गुप्ता और श्री (२०२०) को भारतीय विश्वविद्यालय के छात्रों और शिक्षकों के बीच मिश्रित प्रतिक्रियाएं मिलीं, जो डिजिटल पहुंच को महत्व देते थे लेकिन व्यक्तिगत सहायता और अध्ययन के वातावरण की कमी महसूस करते थे। उपयोगकर्ताओं को प्रशिक्षित करने के लिए ऑनलाइन कार्यशालाएं और वेबिनार जैसी नवीन प्रथाओं का दस्तावेजीकरण जेना (२०२०) द्वारा किया गया था।

रफीक और अन्य (२०२०) ने भारत सहित दक्षिण एशियाई पुस्तकालयों में पहुंच और समर्थन के लिए व्हाट्सएप जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के उपयोग पर प्रकाश डाला। घोष (२०२०) ने महाराष्ट्र में विश्वविद्यालय पुस्तकालयों पर प्रभाव का विश्लेषण किया ये अध्ययन सामूहिक रूप से तेजी से डिजिटल अपनाने, परिचालन चुनौतियों और अभिनव अनुकूलन को रेखांकित करते हैं जो महामारी के दौरान पुस्तकालय सेवाओं की विशेषता रखते हैं, नागपुर शहर में विश्वविद्यालय पुस्तकालयों के अनुभवों की जांच करने के लिए बहुमूल्य अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं।

**शोध पद्धति:**

यह अध्ययन महामारी के दौरान पुस्तकालय सेवाओं में परिवर्तन, चुनौतियों और नवाचारों का विश्लेषण करने के लिए एक वर्णनात्मक शोध रचना का उपयोग करता है। यह सर्वेक्षण, साक्षात्कार, पुस्तकालय रिकॉर्ड और

Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, 

प्रकाशित रिपोर्ट सहित गुणात्मक एवं मात्रात्मक डेटा संग्रह विधियों का उपयोग करता है। अध्ययन का उद्देश्य संसाधन उपयोग और उपयोगकर्ता संतुष्टि में रुझानों की पहचान करना है।

**कोविड-19 के बीच नागपुर, महाराष्ट्र में विश्वविद्यालय पुस्तकालय: सेवा अनुकूलन का आकलन**

कोविड-१९ महामारी ने नागपुर, महाराष्ट्र में विश्वविद्यालयों में पुस्तकालय सेवाओं को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया, जिससे भौतिक संचालन, तकनीकी अनुकूलन और उपयोगकर्ता व्यवहार प्रभावित हुए। प्रभाव के प्रमुख पहलुओं में पुस्तकालयों का बंद होना, डिजिटल संसाधनों का बढ़ता उपयोग, तकनीकी अपनाना और उपयोगकर्ता व्यवहार में बदलाव शामिल थे।

लॉकडाउन के कारण पुस्तकालयों तक भौतिक पहुँच सीमित थी और लॉकडाउन के बाद, पुस्तकालय सीमित क्षमता एवं सख्त सुरक्षा उपायों के साथ संचालित हुए। पुस्तकालयों ने ई-पुस्तकों, ऑनलाइन पत्रिकाओं और डेटाबेस सहित अपने डिजिटल संग्रह का विस्तार किया एवं खुले शैक्षिक संसाधनों (OER) को बढ़ावा दिया। तकनीकी अपनाने में पुस्तक उधार देने के लिए ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म, आभासी संदर्भ सेवाएँ और शोध परामर्श, वेबिनार एवं कार्यशालाएँ और उपयोगकर्ता के अनुकूल पहुँच के लिए मोबाइल ऐप शामिल थे।

दूरस्थ सेवाओं की बढ़ती मांग और अध्ययन की आदतों में बदलाव के साथ उपयोगकर्ता व्यवहार में बदलाव आया। चुनौतियों में डिजिटल विभाजन, बजट की कमी और पुस्तकालय कर्मचारियों एवं उपयोगकर्ताओं के लिए प्रशिक्षण की ज़रूरतें शामिल थीं। अभिनव प्रतिक्रियाओं में डिजिटल साक्षरता कार्यक्रम, विस्तारित सहायता सेवाएँ और प्रकाशकों के साथ सहयोग शामिल थे।

महामारी के बाद के प्रभावों में हाइब्रिड सेवाएँ, बेहतर डिजिटल अवसंरचना और पहुँच पर ध्यान केंद्रित करना शामिल था। पुस्तकालयों ने भौतिक और डिजिटल सेवाओं को मिलाकर एक हाइब्रिड मॉडल को तेजी से अपनाया है और डिजिटल अवसंरचना में निवेश को प्राथमिकता दी है। सभी उपयोगकर्ताओं के लिए संसाधनों को सुलभ बनाने के प्रयास, चाहे वे किसी भी स्थान पर हों, एक प्रमुख लक्ष्य बने हुए हैं।

**भौतिक से डिजिटल सेवाओं में बदलाव:**

कोविड-१९ महामारी ने नागपुर में विश्वविद्यालय पुस्तकालयों को अपनी भौतिक सुविधाएँ बंद करने के लिए मजबूर किया, जिसके परिणामस्वरूप पुस्तकें उधार लेने और पत्रिकाओं तक पहुँचने जैसी व्यक्तिगत पुस्तकालय सेवाएँ समाप्त हो गईं। शैक्षणिक आवश्यकताओं का समर्थन जारी रखने के लिए, पुस्तकालयों ने दूरस्थ सेवा वितरण की ओर रुख किया। शैक्षणिक कार्य में निरंतरता बनाए रखने के लिए, विश्वविद्यालयों ने ई-जर्नल, ई-बुक और ऑनलाइन डेटाबेस जैसे ई-संसाधनों की सदस्यता बढ़ा दी। JSTOR, स्प्रिंगर और NDL जैसे प्रमुख प्लेटफ़ॉर्म छात्रों और शोधकर्ताओं के लिए महत्वपूर्ण संसाधन बन गए।

डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म पर जाने से संसाधनों तक पहुँच का दायरा बढ़ा, जिससे छात्रों को कहीं से भी, कभी भी संसाधनों तक पहुँचने की अनुमति मिली, बशर्ते उनके पास इंटरनेट कनेक्टिविटी हो। पुस्तकालयों ने व्यक्तिगत सेवाओं की जगह वर्चुअल संदर्भ डेस्क और चैट सहायता शुरू की, जिससे उपयोगकर्ता लाइब्रेरियन से बातचीत कर सकते हैं और संसाधनों का पता लगाने, ऑनलाइन सामग्री तक पहुँचने और डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म से संबंधित समस्याओं के निवारण में वास्तविक समय में सहायता प्राप्त कर सकते हैं। लाइब्रेरी स्टाफ़ ने लाइव चैट, ईमेल या वीडियो कॉल के ज़रिए मार्गदर्शन प्रदान किया, जिससे विस्तारित डिजिटल लाइब्रेरी ऑफ़रिंग को नेविगेट करने में व्यक्तिगत सहायता सुनिश्चित हुई।

इस बदलाव ने पुस्तकालयों को डिजिटल संसाधनों के अधिक उपयोग को प्रोत्साहित करते हुए अनुसंधान और सीखने का समर्थन जारी रखने में सक्षम बनाया, एक प्रवृत्ति जो महामारी के बाद के युग में भी जारी रहने की उम्मीद है।

Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, 

**पुस्तकालयों के सामने आने वाली चुनौतियाँ:**

महामारी ने विश्वविद्यालय के पुस्तकालयों के लिए महत्वपूर्ण चुनौतियाँ खड़ी की हैं, जिनमें भौतिक संसाधनों को डिजिटल बनाने के लिए अपर्याप्त बुनियादी ढाँचा, छात्रों और कर्मचारियों के लिए सीमित इंटरनेट कनेक्टिविटी और संसाधनों की कमी शामिल है। अपर्याप्त बुनियादी ढाँचे के लिए स्कैनिंग उपकरण, सॉफ़्टवेयर और मानव संसाधनों में महत्वपूर्ण निवेश की आवश्यकता होती है, जिसे कई संस्थान अल्पावधि में प्रदान करने के लिए संघर्ष करते हैं। इसके अतिरिक्त, कुशल डिजिटलीकरण के लिए आवश्यक तकनीकी कौशल अक्सर इन-हाउस उपलब्ध नहीं होते हैं, जिससे देरी होती है। सीमित इंटरनेट कनेक्टिविटी डिजिटल पहुँच के लिए एक और महत्वपूर्ण बाधा है, खासकर ग्रामीण या आर्थिक रूप से वंचित क्षेत्रों में। कम आय वाले पृष्ठभूमि के छात्रों और संकाय सदस्यों को धीमे कनेक्शन, अस्थिर नेटवर्क और हाई-स्पीड इंटरनेट प्लान वहन करने में असमर्थता के कारण ऑनलाइन संसाधनों तक पहुँचने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। यह समस्या छात्रों की डिजिटल लाइब्रेरी सामग्री तक पहुँचने की क्षमता को प्रभावित करती है और कर्मचारियों के लिए लगातार वर्चुअल सहायता प्रदान करना मुश्किल बनाती है।

बजट में कटौती और ऑनलाइन संसाधनों के लिए लाइसेंस प्राप्त करने में कठिनाई भी महामारी के दौरान विश्वविद्यालयों के लिए महत्वपूर्ण चुनौतियाँ रही हैं। पुस्तकालयों को अक्सर सीमित बजट में काम करने के लिए मजबूर किया जाता था, जिससे नए या अधिक व्यापक ऑनलाइन संसाधनों के लिए लाइसेंस खरीदने की उनकी क्षमता सीमित हो जाती थी। महामारी के दौरान डिजिटल सामग्री की मांग में वैश्विक उछाल के कारण कीमतों में वृद्धि हुई, जिससे विश्वविद्यालयों के लिए बढ़ती लागतों को पूरा करना कठिन हो गया।

डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म के लिए उपयोगकर्ता अनुकूलन भी कुछ छात्रों और संकाय सदस्यों के लिए चुनौतीपूर्ण रहा है। पुराने संकाय सदस्यों को दूरस्थ शिक्षण और शोध सहायता के लिए आवश्यक ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म और टूल अपनाने में संघर्ष करना पड़ा। कुछ छात्रों, विशेष रूप से डिजिटल वातावरण के सीमित संपर्क वाले छात्रों को डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म और वर्चुअल लाइब्रेरी सेवाओं पर निर्भर शोध एवं अध्ययन के नए तरीकों को अपनाने में कठिनाई हुई।

ऑनलाइन सेवाओं में परिवर्तन ने कुछ उपयोगकर्ता समूहों के बीच डिजिटल साक्षरता अंतर को उजागर किया, जिनके पास डिजिटल संसाधनों का कुशलतापूर्वक उपयोग करने के लिए आवश्यक कौशल की कमी थी। लाइब्रेरी कर्मचारियों को डिजिटल साक्षरता में सुधार के लिए सहायता और प्रशिक्षण प्रदान करते हुए दोहरी भूमिका निभानी पड़ी।

**कर्मचारी अनुकूलन और प्रशिक्षण:**

विश्वविद्यालयों में ऑनलाइन सीखने के लिए संक्रमण ने वर्चुअल परामर्श आयोजित करने, ऑनलाइन कार्यशालाओं की मेजबानी करने और वास्तविक समय सहायता प्रदान करने के लिए ज़ूम और माइक्रोसॉफ्ट टीम्स जैसे डिजिटल संचार प्लेटफ़ॉर्म को तेज़ी से अपनाने की आवश्यकता पैदा की। लाइब्रेरियन को दूरस्थ रूप से काम करते समय इन प्लेटफ़ॉर्म का प्रभावी ढंग से उपयोग करने के तरीके के बारे में प्रशिक्षित किया गया। उन्होंने डिजिटल संसाधनों की बढ़ती मांग को संभालने और ई-पुस्तकों और अन्य ऑनलाइन सामग्रियों के दूरस्थ उधार का प्रबंधन करने के लिए लाइब्रेरी प्रबंधन सॉफ़्टवेयर (LMS) पर भी प्रशिक्षण प्राप्त किया।

लाइब्रेरियन ने वर्चुअल संदर्भ सेवाओं के प्रबंधन के लिए विशिष्ट प्रशिक्षण भी लिया, जिसमें ऑनलाइन शोध परामर्श आयोजित करना, डिजिटल सामग्री तक पहुँचने से संबंधित समस्याओं का निवारण करना और डेटाबेस और डिजिटल रिपॉजिटरी को नेविगेट करने में उपयोगकर्ताओं का मार्गदर्शन करना शामिल है। इसके लिए उन्हें

Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, 

डिजिटल वातावरण में उपयोगकर्ताओं को प्रभावी ढंग से समर्थन देने के लिए प्रौद्योगिकी और ग्राहक सेवा दोनों में पारंगत होना आवश्यक था।

पूरी तरह से डिजिटल लाइब्रेरी सिस्टम में बदलाव के कारण लाइब्रेरी कर्मचारियों के लिए कार्यभार बढ़ गया, क्योंकि उन्हें ऑनलाइन संदर्भ डेस्क, डिजिटल उधार प्रणाली और वर्चुअल शोध सहायता जैसी दूरस्थ सेवाओं की निगरानी और प्रबंधन करना था। वे विभिन्न समय क्षेत्रों में छात्रों और शिक्षकों की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए सेवा के विस्तारित घंटे प्रदान करने के लिए भी जिम्मेदार थे।

जैसे-जैसे भौतिक पुस्तकालय संग्रह बंद होते गए, डिजिटलीकरण के प्रयास तेज़ होते गए, जिसमें स्कैनिंग, पुस्तकों और लेखों को परिवर्तित करना, डिजिटल सामग्री को व्यवस्थित और टैग करना और आसान पहुँच सुनिश्चित करना शामिल था। लाइब्रेरियन को ई-संसाधनों तक पहुँचने, ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म पर नेविगेट करने और तकनीकी समस्याओं के निवारण से संबंधित पूछताछ की अधिक मात्रा को संभालना पड़ा। इसके अतिरिक्त, कई लाइब्रेरियन को उपयोगकर्ताओं के बीच डिजिटल साक्षरता को बेहतर बनाने के लिए अतिरिक्त सहायता और प्रशिक्षण प्रदान करने का काम सौंपा गया था।

महामारी के दौरान डिजिटल सेवाओं में तेज़ी से बदलाव के कारण लाइब्रेरियन को नए कौशल हासिल करने और बढ़ते कार्यभार को प्रबंधित करते हुए विकसित तकनीकों के अनुकूल होने की आवश्यकता थी।

**नवाचार और पहुंच:**

नागपुर और देश भर के पुस्तकालयों ने डिजिटल संसाधनों में बदलाव का समर्थन करने के लिए विभिन्न रणनीतियों को लागू किया है। इनमें वेबिनार और ऑनलाइन कार्यशालाएँ शामिल हैं, जिनका उद्देश्य छात्रों, शिक्षकों और कर्मचारियों के बीच डिजिटल साक्षरता में सुधार करना है। ये सत्र उपयोगकर्ताओं को ई-पुस्तकों, ई-पत्रिकाओं और अकादमिक डेटाबेस तक पहुँचने की प्रक्रिया के माध्यम से मार्गदर्शन करते हैं, साथ ही उन्नत खोज उपकरण, डिजिटल उद्धरण उपकरण और अनुसंधान प्रबंधन सॉफ़्टवेयर पर प्रशिक्षण प्रदान करते हैं।

व्यावहारिक सत्र भी प्रदान किए जाते हैं, जो ऑनलाइन शैक्षणिक संसाधनों को प्रभावी ढंग से खोजने और उनका उपयोग करने के तरीके पर इंटरैक्टिव प्रदर्शन प्रदान करते हैं। ये सत्र उपयोगकर्ताओं को डिजिटल सामग्री को स्वतंत्र रूप से एक्सेस करने और प्रबंधित करने में सक्षम बनाते हैं, जिससे नियमित प्रश्नों के लिए कर्मचारियों पर उनकी निर्भरता कम हो जाती है। कुछ पुस्तकालयों ने ज़ोटेरो और एंडनोट जैसे उपकरणों का उपयोग करके अकादमिक लेखन, शोध पद्धतियों और संदर्भों के प्रबंधन पर विशेष कार्यशालाओं की मेजबानी की है।

सोशल मीडिया जुड़ाव इन पहलों का एक और महत्वपूर्ण पहलू है। नागपुर और देश भर के पुस्तकालयों ने छात्रों और शिक्षकों के साथ वास्तविक समय में जुड़ने, महत्वपूर्ण अपडेट, पुस्तकालय घोषणाओं और नए ऑनलाइन संसाधनों या सेवाओं के बारे में जानकारी प्रसारित करने के लिए व्हाट्सएप, टेलीग्राम और फेसबुक जैसे प्लेटफार्मों का उपयोग किया है। उन्होंने उपयोगकर्ताओं के साथ सीधे संवाद को बढ़ावा देने के लिए व्हाट्सएप और टेलीग्राम समूह भी बनाए हैं, जिससे लाइब्रेरियन प्रश्नों का त्वरित उत्तर दे सकते हैं और उपयोगी जानकारी प्रसारित कर सकते हैं।

नियमित अपडेट, ई-संसाधनों पर गाइड, प्रभावी ऑनलाइन सीखने के लिए सुझाव और नई उपलब्ध डिजिटल सामग्री पर जानकारी पोस्ट करने के लिए फेसबुक और इंस्टाग्राम प्लेटफ़ॉर्म का उपयोग किया गया है। पोल, क्विज़ और इंटरेक्टिव पोस्ट के माध्यम से इंटरेक्टिव जुड़ाव ने पुस्तकालयों को छात्रों और शिक्षकों को मज़ेदार और जानकारीपूर्ण तरीकों से जोड़ने की अनुमति दी है। इन अभिनव तरीकों ने पुस्तकालयों को एक मजबूत उपस्थिति बनाए रखने और महामारी की चुनौतियों का प्रभावी ढंग से सामना करने में मदद की है।

**निष्कर्ष:**

Research paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, 

कोविड-१९ महामारी ने नागपुर, महाराष्ट्र में पुस्तकालय सेवाओं को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया है, जिससे उन्हें दूरस्थ शिक्षा और शोध के लिए अनुकूल होना पड़ा है। ई-जर्नल, ई-बुक और ऑनलाइन डेटाबेस जैसे डिजिटल संसाधनों में बदलाव के कारण सदस्यता एवं आभासी सेवाओं में वृद्धि हुई है। हालाँकि, महामारी ने चुनौतियों को भी पेश किया, जैसे संसाधनों को डिजिटाइज़ करने के लिए अपर्याप्त बुनियादी ढाँचा, सीमित इंटरनेट कनेक्टिविटी, वित्तीय तनाव और डिजिटल साक्षरता का अंतर। लाइब्रेरियन को नए डिजिटल टूल और प्लेटफ़ॉर्म के साथ जल्दी से अनुकूल होना पड़ा, जिसके लिए व्यापक प्रशिक्षण एवं कार्यभार में वृद्धि की आवश्यकता थी। उन्हें डिजिटल संसाधनों तक पहुँच का प्रबंधन करना था, आभासी सहायता प्रदान करनी थी और भौतिक संग्रहों के डिजिटलीकरण की देखरेख करनी थी। वेबिनार, ऑनलाइन कार्यशालाएँ एवं व्हाट्सएप, टेलीग्राम और फेसबुक जैसे सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म जैसे अभिनव प्रतिक्रियाएँ एवं पहुंच भी लागू किए गए। महामारी के अनुभव एक ऐसे भविष्य का सुझाव देते हैं जहाँ सेवा वितरण का एक हाइब्रिड मॉडल, जिसमें भौतिक और डिजिटल दोनों संसाधनों का मिश्रण होगा, संभवतः आदर्श होगा। पुस्तकालयों में डिजिटल परिवर्तन के लिए जोर जारी रहने की उम्मीद है, जिसमें ई-संसाधनों का विस्तार, डिजिटल बुनियादी ढाँचे में सुधार और कर्मचारियों के प्रशिक्षण को बढ़ाने पर जोर दिया जाएगा। महामारी से सीखे गए सबक भविष्य में पुस्तकालय सेवाओं को आकार देंगे, जिससे वे भविष्य के व्यवधानों के लिए अधिक लचीले एवं अनुकूल बनेंगे।

**संदर्भ:**


- *Chakraborty, S., & Jana, S. (2021). Challenges and opportunities of academic libraries in India because of COVID-19. Annals of Library and Information Studies, 68(June), 110–118.*
- *Deol, N. K., & Brar, K. S. (2021). The pandemic of COVID-19 and role of academic libraries. Library Philosophy and Practice, 1–10.*
- *Dube, B. (2020). Rural online learning in the context of COVID-19 in South Africa: Evoking an inclusive education approach. Multidisciplinary Journal of Educational Research, 10(2), 135–157. https://doi.org/10.17583/remie.2020.5607*
- *Google News. (2020). Coronavirus (COVID-19). Retrieved from https://news.google.com/covid19/map?hl=en-IN&mid=%2Fm%2F055vr&gl=IN&ceid=IN%3Ae*
- *Jena, P. K. (2020). Impact of pandemic COVID-19 on education in India. International Journal of Current Research, 12(07), 12582–12586.*
- *Johnson, A., & Bakare, O. (2021). COVID-19 effects on libraries goes beyond books: Lead City University in perspective. Library Philosophy and Practice, 6610.*
- *Joshi, A., Vinay, M., & Bhaskar, P. (2020). Impact of coronavirus pandemic on the Indian education sector: Perspectives of teachers on online teaching and assessments. Interactive Technology and Smart Education, 18(2), 205–226. https://doi.org/10.1108/itse-06-2020-0087*
- *Joshi, P. K., & Kulkarni, S. A. (2020). Transition to digital resources in Nagpur university libraries: The effect of the COVID-19 pandemic. Library Technology Reports, 56(4), 28–35. https://doi.org/10.5860/ltr.56.4*
- *Khattar, A., Jain, P. R., & Quadri, S. M. K. (2020). Effects of the disastrous pandemic COVID-19 on learning styles, activities, and mental health of young Indian students—a machine learning approach. 4th International Conference on Intelligent Computing and Control Systems (ICICCS), 1190–1195. https://doi.org/10.1109/ICICCS48265.2020.9120955*
- *Khandait, R. S., & Wankhede, S. D. (2021). Library services during COVID-19 in Nagpur's higher educational institutions: A survey-based study. Journal of Information Management, 17(1), 9–14.*
- *Naikwadi, V. A., & Sankpal, D. P. (2020). Impact of lockdown on libraries and library professionals: A case study of Maharashtra. SRELS Journal of Information Management, 57(6), 351–359. https://doi.org/10.17821/srels/2020/v57i6/152919*
- *Patil, V. B., & Rathi, A. B. (2020). The changing role of university libraries during the COVID-19 pandemic: A case study of Nagpur universities. Journal of Academic Library and Information Science, 13(3), 105–115.*

- *Rafiq, M., et al. (2021). University libraries' response to the COVID-19 pandemic: A developing country perspective. The Journal of Academic Librarianship, 47(1), 1–10.*
- *Sawant, S. (2021). Services offered by Indian libraries during COVID-19. Annals of Library and Information Studies, 68, 230–237.*
- *Sharma, S., & Bansal, R. (2020). Libraries in the time of COVID-19: Challenges and strategies in the universities of Nagpur. Library Philosophy and Practice, 1–10. https://digitalcommons.unl.edu/libphilprac/4200*
- *Tej, M. M., et al. (2021). Impact of COVID-19 on academic libraries: A case study. Library Philosophy and Practice, 1–13.*
- *Vishnumaya, R. S. (2021). Public libraries' response to COVID-19 pandemic: A study based on Delhi Public Library System. KELPRO Bulletin, 25(2), 96–111.*
- *Wadhai, D., & Kale, S. P. (2021). University libraries in Nagpur during the COVID-19 pandemic: Service adaptations and future strategies. International Journal of Library and Information Science, 12(5), 50–57.*